RAJYA SABHA

Monday, the 28th *November,* 2005/7 *Agrahayana,* 1927 *(Saka)*

The House met at eleven of the clock,

MR. CHAIRMAN in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Amendments to Wakf Act

*61. MAULANA OBAIDULLAH KHAN AZMI: Will the Minister of SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT be pleased to state:

(a) whether any suggestions have been received for amendments to the Wakf Act, 1995;

(b) if so, the details thereof; and

(c) the action being taken in this matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT (SHRIMATI SUBBULAKSHMI JAGADEESAN): (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) Yes Sir. The suggestions for amendments to the Wakf Act, 1995 relate to almost all Sections of the Act.

(c) The amendments are being considered by a Joint Parliamentary Committee.

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : सर, मेरे सवाल के जवाब में यह कहा गया हैं कि संयुक्त संसदीय समिति द्वारा इन संशोधन पर विचार किया जा रहा हैं। सर, नयी लोक सभा बनने के बाद से अब तक जेपीसी वक्फ की तशकील ही नहीं हुई हैं और न ही उसकी अब तक कोई मीटिंग हुई हैं तो आखिर इस पर विचार कहां किया जा रहा हैं?

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: سر، میرے سوال کے جواب میں یہ کہا گیا ہے کہ سنگیت سنسدئے سمتی دوارا ان سنشودھنوں پر وچار کیا جا رہا ہے- سر، نئی لوک سبھا بننے کے بعد سے اب تک چے پی سی وقف کی تشکیل نہیں ہوئی ہے اور نہ ہی اس کی اب تک کوئی میٹنگ ہوئی ہے تو آخر اس پر وچار کہاں کیا جا رہا ہے؟

SHRIMATI SUBBULAKSHMI JAGADEESAN: Mr. Chairman, Sir, the constitution of a Joint Parliamentary Commitee is under the consideration of the Rajya Sabha Secretariat.

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपको एक सूचना देना चाहता हूं कि कमेटी ...(व्यवधान)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आजमी : नहीं, सर, यह जवाब बिल्कुल नाकाफी हैं।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: نہیں سر، یہ جواب بالکل ناکافی ہے-

श्री सभापति : मैं जवाब दे रहा हूं।

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आजमी : सर, आप जवाब देंगे। यह तो मेरे लिए सौभाग्य की बात हैं।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: سر، آپ جواب دیں گے- یہ تو میرے لئے سوبھاگئے کی بات ہے-

श्री सभापति : मैं इसलिए जवाब दे रहा हूं कि मामला बहुत इम्पोर्टेट हैं। इसमें कमेटी का गठन करने में मेरे सामने थोड़ी दुविधा आ रही हैं। मैं चाहता हूं कि कमेटी ऐसे इफैक्टिव मैंबर्स कि निश्चित रूप से इस पर कोई कार्यवाही हो। मैं आपसे और बाकी के सब माननीय सदस्यों से सलाह करके इसका गठन करूंगा।

श्री नीलोत्पल बसु : सर इसमें एक प्वाइंट हैं। काफी देर तक कमेटी का चेयरमैन न बनने के कारण ...(व्यवधान).. लगातार आपसे निवेदन किया हैं कि ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, मैं आपकी बात को मान रहा हूं कि देरी हुई हैं। मैं इसी सत्र में, एक वीक के अदर ही इस कमेटी का, सबसे सलाह करके गठन कर दूंगा। नेक्स्ट क्वेश्चन।

श्री शाहिद सिद्दिकी : सर, इस पर सवाल उठाने हैं, सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछने हैं। इस पर बहुत कुछ होना चाहिए।

شری شاہد صدیقی: سر، اس پر سوال اٹھانے ہیں- سپلیمینٹری سوال پوچھنے ہیں- اس پر بہت کچھ ہونا چاہئے-

श्री सभापति : कमेटी की रिपोर्ट ....(**व्यवधान**)..

---

†transliteration of Urdu Script.

एक माननीय सदस्य : सर, थोड़े सुझाव तो आ जाने दीजिए।

श्री शाहिद सिद्दिकी : सर, आज हर चीज का प्राइवेटाइजेशन हो रहा हैं, जो सरकारी काम हैं, उनका भी हो रहा हैं। यह वक्फ बनाया गया था, मुसलमानों की आर्थिक हालत को बेहतर बनाने के लिए लेकिन आज तक 55 साल में आर्थिक हालत बेहतर बनाने की तरफ यह कदम नहीं उठा सका हैं। सारे वक्फ सारे हिंदुस्तान में फेल हुए हैं। इसको ज्यादा इफैक्टिव बनाने के लिए आपकी मिनिस्टरी को भी सोचना होगा और ऐसे संशोधन लाने होंगे जिनसे ज्यादा से ज्यादा एनजीओज़ का, प्राइवेट सैक्टर का इनवॉल्वमेंट हो ताकि यह जो लाखों-करोड़ो की प्रॉपर्टी हैं-सिर्फ दिल्ली में पचास हजार करोड़ की प्रॉपर्टी हैं-जिसकी उचित प्रयोग नहीं हो रहा हैं ...(**व्यवधान**)... इसके लिए ...(**व्यवधान**)...

شری شاہد صدیقی: سر، آج ہر چیز کا پرائیویٹائزیشن ہو رہا ہے، جو سرکاری کام ہیں، ان کا بھی ہو رہا ہے- یہ وقف بنایا گیا تھا، مسلمانوں کی آرتھک حالت کو بہتر بنانے کے لئے، لیکن آج تک 55 سالوں میں آرتھک حالت بہتر بنانے کی طرف یہ قدم نہیں اٹھا سکا ہے- سارے وقف سارے ہندوستان میں پھیلے ہوئے ہیں- اس کو زیادہ افیکٹو بنانے کے لئے آپ کی منسٹری کو بھی سوچنا ہوگا اور ایسے سنشودھن لانے ہوں گے جن سے زیادہ سے زیادہ این-جی-اوز کا، پرائیویٹ سیکٹر کا انولومینٹ ہو تاکہ یہ جو لاکھوں کروڑوں کی پراپرٹی ہے- صرف دہلی میں پچاس ہزار کروڑ کی پراپرٹی ہے- جس کا اچت پریوگ نہیں ہو رہا ہے ....مداخلت....

श्री सभापति : माननीय सदस्य, भाषण मत दीजिए। आपकी भावनाओं को देखकर ही ..(**व्यवधान**)... एक मिनट ...(**व्यवधान**)...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : माननीय सभापति महोदय, आपने फरमाया हैं कि एक हफ्ते के अंदर इसका गठन कर देंगे। सारी कमेटियां बन गयी हैं सिर्फ यही एक कमेटी नहीं बनी हैं, बाकी सब कमेटियां बन चुकी हैं।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: مانئے سبھاپتی مہودے، آپ نے فرمایا کہ ایک ہفتے کے اندر اس کا گھٹن کر دیں گے- ساری کمیٹیاں بن گئی ہیں صرف یہی ایک کمیٹی نہیں بنی ہے، باقی سب کمیٹیاں بن چکی ہیں

श्री सभापति : आप सब माननीय सदस्यों की भावनाओं को देखकर ही मैंने कहा हैं। नैक्स्ट। चलिए अब। ...(व्यवधान)....

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आजमी : सर, सारी कमेटियां बन चुकी हैं, केवल यही कमेटी बाकी रह गयी हैं, इसके साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: سر، ساری کمیٹیاں بن چکی ہیں، صرف یہی کمیٹی باقی رہ گئی ہے، اس کے ساتھ بھید بھاؤ ہونا چاہئے-

†Transliteration in Urdu Script.

श्री सभापति :वह मैं देख लूंगा। प्रश्न संख्या 62। ?

Merger of Mid-Day Meal Programme with S.S.A.

*62. SHRI V. NARAYANASAMY: Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Government have implemented Mid-Day Meal programme in the schools in various States; and

(b) whether it is also a fact that Government propose to merge Mid-Day Meal programme with Sarva Shiksha Abhiyan?

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI ARJUN SINGH): (a) Yes, Sir. The Mid-Day Meal Programme is being implemented for children at primary stage in schools run by Government and Local Bodies, Govt.-aided schools and Education Guarantee Scheme and Alternative and Innovative Education centres.

(b) A proposal is being examined.

SHRI V. NARAYANASAMY: Mr. Chairman, Sir, for implementing the Mid-day Meal Programme through the State Governments, the Government of India allotted Rs. 1,675 crores for the year 2004-05 and Rs. 3,010 crores for the year 2005-06. But, for the Sarva Shiksha Abhiyan, an amount of Rs. 7,165 crores have been allotted. It is for this reason that the implementation of the Mid-Day Meal Programme by various States is not being done in a proper way. The States are implementing it through various agencies; like, in some States, it is done through the Education Department, in some States, it is carried out by the Social Welfare Department and in other States, it is done through various other Departments of the State Government. I would like to know from the hon. Minister whether his Ministry is demanding more funds for implementation of the Mid-Day Meal Scheme. This is first part of my supplementary. I would also like to know whether the Government would like to have uniform implementation of the scheme by one agency in each State instead of giving it to various agencies by various State Governments The Government of India may issue guidelines in this regard.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, at the moment, there is no proposal to immediately ask for more money because the money provided is being utilised, and I don't see any necessity straightway. So far as the guidelines are concerned, the guidelines are there. The States have to follow them.